न्याय का ईश्वर विचार
B.A I (Hons) भारतीय दर्शन

ईश्वर की समस्या दर्शन की आधारभूत समस्याओं में से एक रही है। दर्शन का इतिहास इस बात का साक्षी है कि मानव आदि काल से ईश्वर के विषय में सोचता रहा है।

न्याय दर्शन ईश्वरवादी दर्शन है। यह ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता है। न्याय दर्शन के प्रणेता महर्षि गौतम को माना गया है। न्याय दर्शन जीवात्मा के ऊपर एक परमात्मा के रूप में ईश्वर को स्वीकार किया है जो चेतना युक्त है। वात्स्यायन ने कहा है कि न्याय का ईश्वर शरीर धारी है जो सत्-चित्-आनन्द से पूर्ण है इस परमात्मा को ईश्वर कहा जाता है। न्याय दर्शन यह मानता है कि ईश्वर ही विश्व का स्रष्टा पालन कर्ता और संहार कर्ता है। संसार की रचना वह नित्य परमाणु की सहायता से करता है। यह नित्य परमाणु देश, काल, मन और आत्मा है।

न्याय दर्शन यह मानता है कि ईश्वर सर्वज्ञ है तथा ज्ञान उसकी एक महत्वपूर्ण विशेषता है। नैयायिकों ईश्वर की अवधारणा प्रस्तुत किया है। ईश्वर नैतिकता पूर्ण और दयालु है वह सभी कर्मों से मुक्त है फिर भी अपने द्वारा रचे गये प्राणियों के लिए कर्म करता है। इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए न्याय भाष्य (4.1.21) में कहा गया है कि जिस प्रकार एक पिता अपने बच्चों के लिए कर्म करता है उसी प्रकार ईश्वर प्राणियों के लिए कर्म करता है। वस्तुतः नैयायिकों का ईश्वर संसार का नैतिक शासक, अधिष्ठाता, सुख-दुख का

नियंत्रण रखने वाला तथा जीवों को अपने कर्मों का वास्तविक फल दाता भी है। न्याय का ईश्वर जीवात्मा ईश्वर से सम्बन्ध रखता है। उदयन ने भी कहा है कि जीवों का अनिवार्य रूप से कर्म करना चाहिए इसलिए कर्मों का फल भी भोगना है।

ईश्वर स्रष्टा और पालन कर्ता होने के अतिरिक्त विश्व का संहर्ता भी है जिस प्रकार मिट्टी के घड़े का नाश होता है उसी प्रकार विश्व का भी नाश होता है जब ईश्वर विश्व में नैतिक और आध्यात्मिक महत्व देखता है तब तब विध्वंसक शक्तियों द्वारा विश्व का विनाश करता है।

ईश्वर मानव का कर्म फल दाता है। हमारे सभी कर्मों का नियामक ईश्वर है। जीवात्मा को शुभ तथा अशुभ कर्मों के अनुसार ईश्वर सुख तथा दुःख प्रदान करता है।

ईश्वर दयालु है वह जीवों को कर्म करने के लिए प्रेरित करता है। न्याय का ईश्वर व्यक्तित्व पूर्ण है जिसमें ज्ञान, इच्छा और आनन्द निहित है

ईश्वर की इच्छा से मानव मोक्ष को प्राप्त करने में सफल होता है तत्व ज्ञान के आधार पर मानव मोक्ष प्राप्ति की कामना करता है - न्याय ईश्वर को अनन्त मानता है। ईश्वर गुणों से युक्त है जिनमें छः गुण आध्यात्मिक प्रधान है इन गुणों को षडैश्वर्य कहा जाता है। ये गुण आधिपत्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान एवं वैराग्य ये गुण ईश्वर में पूर्ण रूप से व्याप्त है।

ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए नैयायिकों ने अनेक प्रमाणों का सहारा लिया है

(1) कारणात्मक तर्क — सर्व प्रथम नैयायिक उद्योतकर

ने न्याय ईश्वर के सत्ता को प्रमाणित करने के लिए तर्क प्रस्तुत किया है। उनका कहना है कि विश्व एक कार्य है जिसका निमित्त कारण ईश्वर है। जो सभी सांसारिक वस्तुएं हैं वे Point से मिल कर बनी हैं जो सभी छोटे छोटे अणु अपने आप में unconscious हैं और इसे प्रमाण मान पाना के लिए एक चेतन ही हो सकता है इस युक्ति को कार्यकारण तर्क कहा जाता है क्योंकि यह कार्य कारण नियम पर आधारित है

(2) नैतिक तर्क — ईश्वर को प्रमाणित करने के लिए न्याय का यह दूसरा तर्क है उद्योतकर का कहना है कि इस संसार दुनिया में उस काल संयोग से वे लोग तक इन विभिन्नताओं को जाना देखते हैं एक तरफ धनी धाने के लिए सुखी लोग हैं तो दूसरी तरफ वहीं ही दुःखी लोग हैं कुछ लोग बुद्धिमान हैं तो कुछ लोग मूर्ख। इस नियम के अनुसार विश्व के लोगों के भाग्य में जो विषमता है इसका भी कुछ न कुछ कारण है क्योंकि शून्य से किसी वस्तु का प्रादुर्भाव नहीं होता है इस नियम के अनुसार मानव के सभी कर्मों का फल सुरक्षित रहता है

(3) वेदों के प्रमाण पर आधारित तर्क — न्याय के अनुसार वेद प्रामाणिक ग्रन्थ है और वेद नैतिक नियम सम्मत पर हैं। वेद में ईश्वर का विभिन्न आदेश निहित है वेद में लिखित बातें परमार्थतः सत्य है और यह मनुष्य की सीमा से परे है ईश्वर की सत्यता सन्देहरहित है ईश्वर के वचन सत्य हैं इससे ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित किया जाता है

(4) श्रुतियों पर आधारित तर्क — ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण यह है कि श्रुति ईश्वर के अस्तित्व की चर्चा करती है वह सभी विषयों का स्वामी है सर्वज्ञ है अन्तर्यामी है जगत का कारण है सृष्टा है और संसार के ये सभी जड़ और चेतन वस्तुओं का निर्माता है